आवाज़ के कुछ खेल

यहाँ चार प्रयोग दिए जा रहे हैं। उन्हें करके देखो। इन चारों पर अपनी टिप्पड़ियाँ हमें भेजना। चुनिन्दा पाँच जवाब चकमक के अगले अंक में छापे जाएँगे। इन पाँच पाठकों को मिलेंगी मज़ेदार किताबें। जवाब हमें 15 मार्च तक चकमक के पते पर ज़रूर भेज देना।

माचिस का टेलीफोन

माचिस के अन्दर की दो डिब्बियों के बीचोंबीच एक छेद कर दो। धागा के दोनों सिरे इन छेदों में पिरो लो। धागे निकल न जाएँ इसलिए उसके सिरों पर माचिस की काड़ियों का एक टुकड़ा बाँध दो। बन गया टेलीफोन।

अपने दोस्त को टेलीफोन की एक माचिस पकड़ा दो जिसे वह कान से लगा लेगी। तुम अपनी माचिस को मुँह से लगा लो। ध्यान रखना कि धागे में झोल न हो। और न ही माचिस पकड़ते वक्त हाथ धागे को छुए। माचिस की डिब्बी अपने मुँह से सटा लो और धीमे से कोई बात बोलो। दोस्त से पूछो कि क्या उसे सुनाई दिया? अगर तुम माचिस के इस टेलीफोन का इस्तेमाल किए बगैर भी उतना ही धीरे बोलते तो क्या उसे सुनाई देता? कोशिश करके देखो!

एक और टेलीफोन

अपनी बात को दूर तक पहुँचाने का एक और भी तरीका है। कैलण्डर को गोल लपेट लो। एक सिरा अपने मुँह के पास और दूसरा दोस्त के कान पर लगाओ। धीरे-से बुदबुदाओ। सुनाई दिया उसे?

मेज़ पर घड़ी

मेज़ पर घड़ी रख लो। उसकी टिक-टिक तुम्हें सुनाई दे ही रही होगी! फिर मेज़ पर अपना कान टिका दो और सुनो। क्या अब भी उतनी ही आवाज़ सुनाई दी?

नगाड़ा बजा

दो चम्मचों और धागे का खेल है यह। दोनों चम्मचों की डण्डी पर एक-एक खूब लम्बा धागा बाँध लो। अच्छी तरह, कस कर। इन चम्मचों को आपस में टकराओ। कैसी आवाज़ आई? चम्मच टकराने जैसी ही ना! अब धागे के दूसरे सिरों को दोनों हाथों की तर्जनी पर खूब अच्छे से लपेट लो। धागा लिपटी उँगलियों को अपने कान में घुसाओ (ध्यान से! बहुत ज़ोर न लगाना।)। दोस्त से कहो कि वो चम्मचों को आपस में टकराए। क्या हुआ? बजा ना....।